अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय मंडल, मुंबई

संदर्भ क्र. : 1430

दिनांक : 27 JUN 2025

महत्वपूर्ण सुचना

विषय : - "संगीत संस्कार" एक नया अभ्यासक्रम - व्यक्तित्व विकास में संगीत की भूमिका

मनुष्य की बाल्यावस्था में उस पर किये गये संस्कार उसे एक सक्षम तथा संवेदनशील नागरिक बनाने में अपूर्व योगदान देते हैं। संगीत, एक मन का विषय है। इसलिए मनुष्य के मनोमस्तिष्क पर इसका गहरा प्रभाव होता है। सभी ने व्यक्ति विकास के लिए संगीत को एक आदर्श माध्यम माना है | मनोवैज्ञनिक दृष्टीकोणसे संगीत के प्रशिक्षण द्वारा विद्यार्थियोंकी जिज्ञासा, एकाग्रता, एकात्मता, स्मृति, कल्पना, अभ्यास, सृजनशीलता आदि विकासात्मक घटकों में वृद्धि होती है। संगीत, व्यक्ति के ध्वनिसंवेदनाओं को सुधारता है |

इसलिए माँ की लोरी,श्लोक, बाल कविता, आरती के रूप में इन संस्कारों को अधिक दृढ़ किया जाता है। संगीत के श्रवण से विद्यार्थियों की एकाग्रता बढ़ती है। संगीत के अभ्यास में दृकश्राव्य, दृष्टि, स्पर्श, संतुलन, प्राण आदि सभी संवेदनाएं प्रखर होती हैं। सांगीतिक अध्ययन विद्यार्थी को अपने आप को पहचानने की शक्ति प्रदान करता है। विद्यार्थियों में निरीक्षण शक्ति, स्मरण शक्ति, प्रेरणा अनुसरणशक्ति, कल्पना, रचनात्मकता, संगठनात्मक शक्ति और आंतरिक शक्ति का विकास होता है। बचपन से किया गया संगीत का अभ्यास, विद्यार्थियों के शारीरिक एवं मानसिक शक्ति बढ़ाने में उपयुक्त होता है।

संगीत व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। मूलतः संगीत एक शाश्वत आनंद प्रदान करनेवाली विद्या होने के कारण इसके प्रशिक्षण से सांगीतिक वातावरण में रहने से व्यक्ति सकारात्मक हो जाती है। इन सभी बातों का विचार करते हुए, अखिल भारतीय गान्धर्व महाविद्यालय मंडल ने दो वर्ष का संगीत संस्कार शिक्षा पाठ्यक्रम निर्माण किया है । इस पाठ्यक्रम पूर्तता के अनुसार वर्ष के अंत में स्वयं शिक्षक द्वारा विद्यार्थी का वार्षिक मूल्यमापन श्रेणी के आधार पर होगा |

A.B.G.M.V. MANDAL MUMBAI

(विश्वास जाधव)
रजिस्ट्रार
अ.भा.गां.म.वि.मंडल

संलग्नित : विषयनिहाय पाठ्यक्रम

रजिस्ट्रार कार्यालय :

वाशी : गांधर्व निकेतन, प्लॉट नं. 5, सेक्टर 9/ए, वाशी, नवी मुंबई - 400703. **Mob.: 8657404920/21/22/23**

मिरज : गांधर्व निकेतन, ब्राह्मणपुरी, मिरज - 416410. **Mob.: 8657404917/18/19**

Email : registrar@abgmvm.org Website : www.abgmvm.org

A.B.G.M.V. MANDAL
MUMBAI

संगीत संस्कार पाठ्यक्रम

व्यक्तित्व विकास में संगीत की भूमिका

परीक्षा संगीत संस्कार
गायन – वादन, भाग -1

उद्देश्य :- इस वर्ष हमें विद्यार्थियों पर संगीत के संस्कार एवं उसके प्रति रूचि निर्माण करना हैं, क्योंकि स्वर और ले के आधारस्तंभ है |
“स्वर” संगीतरूपी भाषा के अक्षर है और “लय” संगीतरूपी भाषा का व्याकरण है|

सूचना :- इस वर्ष में लय और ताल का क्रियात्मक संगीत में साधारण प्रयोग विद्यार्थी से अपेक्षित है | इस वर्ष परीक्षा नहीं होंगी | लेकिन वर्ष के अंत में केवल पाठ्यक्रम पूर्तता के अनुसार स्वयं शिक्षक द्वारा विद्यार्थी का वार्षिक मूल्यमापन श्रेणी के आधार पर होगा | (अ+, अ , ब+, ब)

पाठ्यक्रम :-

1. आसन बैठक – ओंकार का उच्चारण (षडज स्वर में)
2. भाषा सीखने के लिये जिस प्रकार हम पहले स्वर और व्यंजन बोलना सीखते है, उसी प्रकार संगीत में ओंकार का उच्चारण :- सा-प-सां और सा-म-सां |
3. सात स्वरों का शुद्धता पूर्वक गायन तथा लय के साथ स्वरों का अभ्यास करवाना |
4. संगीत में ध्वनियों के साथ स्वरों का अभ्यास किया जायेगा – जैसे स्वरों का आकार, ईकार, उकार, एकार और ओंकार में गाने की क्षमता- सिर्फ एक ही स्वर ध्यान में रखते हुये |
5. दृक, श्राव्य माध्यम से संगीत की शिक्षा, चित्र के माध्यम से संगीत का परिचय, छोटे छोटे लयबद्ध स्वर समूहों का उच्चारण, लयबद्ध बालगीत, पशु-पक्षी के गीत, पर्यावरण गीत, प्रादेशिक गीत आदि |
6. सांगीतिक श्रवण रुचि निर्माण करने हेतु तथा संगीत में आनंद के लिये आवाज की दुनिया में विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करना | विविध बालगीतों का श्रवण |
7. सांगीतिक खेलों के माध्यम से अभ्यास जैसे अंताक्षरी और उसके विविध प्रकार
8. राष्ट्रगीत-जनगणमन
9. अंको की सहायता से दादरा और कहरवा एवं तीनताल बोलने का अभ्यास
10. भूप राग में आरोह – अवरोह और सरगम गीत

परीक्षा संगीत संस्कार
गायन – वादन, भाग -2

उद्देश्य - विद्यार्थी में संगीत के प्रति रुचि और मानसिकता उत्तरोत्तर बढ़ती जाए एवं सरलता से उन्हें संगीत का आनंददायी परिचय हो।

सूचना :- इस वर्ष में स्वर और ताल का क्रियात्मक संगीत में साधारण प्रयोग विद्यार्थी से अपेक्षित है। इस वर्ष परीक्षा नहीं होंगी। लेकिन वर्ष के अंत में केवल पाठ्यक्रम पूर्णता के अनुसार स्वयं शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों का वाचिक मूल्यांकन श्रेणी के आधार पर होगा। (अ+, अ, ब+, ब)

1. उचित आसन बैठक (संगीत के अभ्यास के लिये सभी स्वरों के साथ ओंकार उच्चारण)
2. स्वर, शुद्ध स्वरों का सुरिला उच्चारण, (साँस, गलत जगह न टूटे इस पर ध्यान देना।)
3. लय - यही स्वर छोटे छोटे स्वर समूह के साथ लयबद्ध गाने का अभ्यास
4. ताल - सरल स्वरावली या शुद्ध स्वरों की सरगम (कहरवा और दादरा ताल में)
5. मुखाकृति – गायन/वादन करते समय मुख पर किसी प्रकार की विकृति न आए।
6. गीतों का अभ्यास - संस्कृत श्लोक, बाल गीत, प्राथना गीत, प्रादेशिक गीत, आरती, भजन आदि - भाषा स्पष्ट, उच्चारण शुद्ध हो तथा गीत की लय एवं शब्द के अनुसार भाव प्रदर्शन (Action Song) हो।
7. दृक श्राव्य के माध्यम से संगीत से परिचय (वाद्यों के चित्र दिखाना, वाद्यों का आवाज सुनाना, चित्रों के माध्यम से संगीत परिचय)
8. सरल छोटे छोटे अलंकार सिखाना | उदा. सा सा, रे रे, ग ग
9. स्वरों के नाम बताना (सा- षड्ज, रे – ऋषभ, ग – गंधार आदि)
10. कहानी, रंग एवँ खेलों के माध्यम से संगीत से परिचय
11. राष्ट्रगीत – जन-गण-मन एवं राष्ट्रगान वन्दे मातरम्
12. शुद्ध स्वरों का सरगम गीत, राग भूपाली एवं राग दुर्ग - सरगम गीत एवं सरल बंदिश
13. अंको कि सहायता से ताली देकार दादरा एवं कहरवा बोलने का अभ्यास

परीक्षा संगीत संस्कार
तबला-पखावज, भाग -1

उद्देश्य :- इस वर्ष हमें विद्यार्थियों पर संगीत के संस्कार एवं उसके प्रति रुचि निर्माण करना है, क्योंकि स्वर और लय संगीत के आधारस्तंभ है |
'स्वर' संगीतरूपी भाषा के अक्षर है और 'लय' संगीतरूपी भाषा का व्याकरण है |

सूचना :- इस वर्ष में लय और ताल में परिचित होना विद्यार्थी से अपेक्षित है | इस वर्ष परीक्षा नहीं होंगी | लेकिन वर्ष के अंत में केवल पाठ्यक्रम पूर्तता के अनुसार स्वयं शिक्षक द्वारा विद्यार्थी का वार्षिक मूल्यमापन श्रेणी के आधार पर होगा | (अ+, अ , ब+, ब)

- **पाठ्यक्रम :-**

1. आसन बैठक – ओंकार का उच्चारण |
2. अपने वाद्य का परिचय |
3. भाषा सीखने के लिये जिस प्रकार हम पहले स्वर और व्यंजन बोलना सीखते है, उसी प्रकार तबला पखावज में वर्णों का उच्चारण एवं वादन | उदा. ना, ता, तीं, गे, क, दीं, धा, धीं |
4. मात्र, सम, आवर्तन का सामान्य ज्ञान |
5. चार, छह, आठ मात्रा के आवर्तनों का लयात्मक ज्ञान |
6. दृक, श्राव्य माध्यम से संगीत की शिक्षा,चित्र के माध्यम से संगीत का परिचय, छोटे छोटे लयबद्ध बोल समूहों का उच्चारण | उदा. तीट, तिरकिट, तीटकता, गदीगन |
7. सांगीतिक श्रवण रूचि निर्माण करने हेतु तथा संगीत में आनंद के लिये आवाज की दुनिया में विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करना, विविध ताल वाद्यों का श्रवण |
8. सांगीतिक खेलों के माध्यम से अभ्यास | उदा. गिनती और उसके विविध प्रकार
9. अंको की सहायता से दादरा और कहरवा बोलने का अभ्यास |
10. दादरा और कहरवा बजाने का अभ्यास |

परीक्षा संगीत संस्कार
तबला – पखावज, भाग -2

उद्देश्य :- विद्यार्थी में संगीत के प्रति रुचि और मानसिकता उत्तरोत्तर बढ़ती जाए एवं सरलता से उन्हें संगीत का आनंददायी परिचय हो |

सूचना :- इस वर्ष में लय और ताल का क्रियात्मक संगीत में साधारण प्रयोग विद्यार्थी से अपेक्षित है | इस वर्ष परीक्षा नहीं होंगी | लेकिन वर्ष के अंत में केवल पाठ्यक्रम पूर्तता के अनुसार स्वयं शिक्षक द्वारा विद्यार्थी का वार्षिक मूल्यमापन श्रेणी के आधार पर होगा | (अ+, अ , ब+, ब)

1. उचित आसन
2. बैठक एवं अपने वाद्य पर हाथ का योग्य रखाव |
3. मूल वर्णों का साफ उच्चारण एवं वादन | उदा. ना, ता, तीं, गे, क, दीं, धा, धीं, थुं, न, ट, कत्, घे, घी आदि
4. **लय** - यही वर्ण छोटे छोटे बोल समूह के साथ लयबद्ध बोलने का अभ्यास |
   उदा. तीट, तिरकिट, तीटकता, गदीगन, घेघेतीट घेघेनाना-केकेतीट केकेनाना,
   पखावज – धागेतीट तागेतीट, तकतक धुमकिट,
5. **ताल** – तीनताल / आदिताल का परिचय एवं बजाना |
6. **मुखाकृति** – वादन करते समय मुख पर किसी प्रकार की विकृति न आए ।
7. संगीत श्रवण – विद्यार्थी के पसंद के गीत या वाद्य वादन सुनाना, सुनतें सुनते उस पर हाथ से ताल देने का अभ्यास |
8. ताल के ठेके बोलना और बजाने का आभ्यास | दादरा, कहरवा, तीनताल/आदिताल
9. दृक श्राव्य के माध्यम से संगीत से परिचय (वाद्यों के चित्र दिखाना, वाद्यों का आवाज सुनाना, चित्रों के माध्यम से संगीत परिचय)
10. सरल छोटे छोटे बोल समूह | उदा. धाधा तीट ताता तीट, धीट तीट तागे तीट, धाधा तिरकिट ताता तिरकिट आदि |
11. विविध ताल वाद्य पह्चानना | उदा. टाळ (मंजीरा), ढोलक, डफ, संबल आदि |
12. कहानी, रंग एवं खेलों के माध्यम से संगीत से परिचय | उदा. जैसे की कृष्णलीला एवं होरी पर आधारित गीतों का, किसी महान व्यक्ति की जीवनी पर आधारित गीत जैसे पोवाडा आदि का श्रवण |
13. राष्ट्रगीत जन-गण-मन एवं राष्ट्रगान वंदे मातरम् सरल गायन |

परीक्षा संगीत संस्कार
कथक (नृत्य), भाग -1

उद्देश्य :- इस वर्ष हमें विद्यार्थियों पर संगीत के संस्कार एवं उसके प्रति रुचि निर्माण करना है, क्योंकि स्वर और लय संगीत के आधारस्तंभ है |
'स्वर' संगीतरूपी भाषा के अक्षर है और 'लय' संगीतरूपी भाषा का व्याकरण है |

सूचना :- इस वर्ष में नृत्य और ताल में परिचित होना विद्यार्थी से अपेक्षित है | इस वर्ष परीक्षा नहीं होंगी | लेकिन वर्ष के अंत में केवल पाठ्यक्रम पूर्तता के अनुसार स्वयं शिक्षक द्वारा विद्यार्थी का वार्षिक मूल्यमापन श्रेणी के आधार पर होगा | (अ+, अ , ब+, ब)

- **पाठ्यक्रम :-**

1. ओंकार का उच्चारण
2. चित्रद्वारा विविध नृत्यशैलियों का परिचय (जहाँ हो सके वहाँ व्हीडीओ द्वारा नृत्यका दर्शन)
3. तालीद्वारा लय का परिचय (गायन / वादन संगीत सुनाना)
4. कथक शैलिनुसार खड़े रहने का अभ्यास |
5. पदाघात का अंदाज 8 मात्रा (तत्कार) |
6. हस्तसंचालन का प्राथमिक परिचय।
7. कत्थक के लिए वेषभूषा का परिचय और वाद्य परिचय।
8. विशिष्ट दिशामें लय के साथ चलने का अभ्यास |
9. प्रादेशिक नृत्य की पहचान | (चित्र एवं विडिओ द्वारा)
10. अभिनय गीत का प्रस्तुतीकरण |
11. अंकों के माध्यम से 16 मात्राओं की गिनती |

परीक्षा संगीत संस्कार
कथक (नृत्य) भाग - 2

उद्देश्य - विद्यार्थी में संगीत के प्रति रुचि और मानसिकता उत्तरोत्तर बढ़ती जाए एवं सरलता से उन्हें संगीत का आनंददायी परिचय हो |

सूचना :- इस वर्ष में नृत्य और ताल का क्रियात्मक संगीत में साधारण प्रयोग विद्यार्थी से अपेक्षित है | इस वर्ष परीक्षा नहीं होंगी | लेकिन वर्ष के अंत में केवल पाठ्यक्रम पूर्तता के अनुसार स्वयं शिक्षक द्वारा विद्यार्थी का वार्षिक मूल्यमापन श्रेणी के आधार पर होगा | (अ+, अ , ब+, ब)

1. तीन ताल का ठेका हाथ पर ताल देकर पढंत |
2. कोई भी ताल वाद्य के लय के अनुसार पैरों से ताल देना |
3. भक्ति रसपर आधारित किसी भी गीत पर प्रसुतिकरण का प्रयास |
4. भारतीय लोक नृत्य को पह्चानना | (चित्र/विडिओद्वारा)
5. कथक के कोई भी दो कलाकारों का नाम बताना |
6. संगीत श्रवण – विद्यार्थी के पसंद के गीत या वाद्य वादन सुनाना, सुनतें सुनते उस पर हाथ से ताल देने का अभ्यास |
7. राष्ट्रगीत जन-गण-मन एवं राष्ट्रगान वंदे मातरम् सरल गायन |
8. कहानी, रंग एवं खेलों के माध्यम से संगीत-नृत्य का परिचय |
9. सरल लय में नृत्य के बोल (ता थै थै त्तत्, आ थै थै त्तत्)
10. द्दक श्राव्य के माध्यम से संगीत से परिचय (वाद्यों के चित्र दिखाना, वाद्यों का आवाज सुनाना, चित्रों के माध्यम से संगीत परिचय)
11. प्राकृतिक घटकों का मुद्राओं के माध्यम से परिचय एवं प्रदर्शन | उदा. पशु-पक्षी, नदी, फूल आदि

परीक्षा संगीत संस्कार
भरतनाट्यम् (नृत्य), भाग -1

उद्देश्य :- इस वर्ष हमें विद्यार्थियों पर संगीत के संस्कार एवं उसके प्रति रुचि निर्माण करना है, क्योंकि स्वर और लय संगीत के आधारस्तंभ है |
'स्वर' संगीतरूपी भाषा के अक्षर है और 'लय' संगीतरूपी भाषा का व्याकरण है |

सूचना :- इस वर्ष में नृत्य और ताल में परिचित होना विद्यार्थी से अपेक्षित है | इस वर्ष परीक्षा नहीं होंगी | लेकिन वर्ष के अंत में केवल पाठ्यक्रम पूर्तता के अनुसार स्वयं शिक्षक द्वारा विद्यार्थी का वार्षिक मूल्यमापन श्रेणी के आधार पर होगा | (अ+, अ , ब+, ब)

- **पाठ्यक्रम :-**

1. ओंकार का उच्चारण |
2. चित्रद्वारा विविध नृत्यशैलियों का परिचय |(जहाँ हो सके वहाँ व्हीडीओ द्वारा नृत्य का दर्शन)
3. भरतनाट्यम् शैली में खड़े रहने के लिये किये जाने वाले कोई भी पाँच व्यायाम के प्रकार |
4. तालीद्वारा लय का परिचय | (गायन / वादन संगीत सुनाना)
5. हस्तसंचालन का प्राथमिक परिचय।
6. भरतनाट्यम् के लिए वेषभूषा का परिचय और वाद्य परिचय।
7. विशिष्ट दिशामें लय के साथ चलने का अभ्यास |
8. प्रादेशिक नृत्य की पहचान | (चित्र एवं विडिओ द्वारा)
9. अभिनय गीत का प्रस्तुतीकरण |

संगीत संस्कार भाग - 2
भरतनाट्यम् (नृत्य)

उद्देश्य - विद्यार्थी में संगीत के प्रति रुचि और मानसिकता उत्तरोत्तर बढ़ती जाए एवं सरलता से उन्हें संगीत का आनंददायी परिचय हो |

सूचना :- इस वर्ष में नृत्य और ताल का क्रियात्मक संगीत में साधारण प्रयोग विद्यार्थी से अपेक्षित है | इस वर्ष परीक्षा नहीं होंगी | लेकिन वर्ष के अंत में केवल पाठ्यक्रम पूर्तता के अनुसार स्वयं शिक्षक द्वारा विद्यार्थी का वार्षिक मूल्यमापन श्रेणी के आधार पर होगा | (अ+, अ , ब+, ब)

1. भरतनाट्यम् शैली में खड़े रहने के लिये किये जाने वाले कोई भी पाँच व्यायाम के प्रकार |
   (प्रथम वर्ष के अतिरिक्त)
2. कोई भी ताल वाद्य के लय के अनुसार पैरों से ताल देना |
3. भक्ति रसपर आधारित किसी भी गीत पर प्रसुतिकरण का प्रयास |
4. भारतीय लोक नृत्य को पह्चानना | (चित्र/विडिओद्वारा)
5. भरतनाट्यम् के किन्ही दो कलाकारों का नाम बताना |
6. संगीत श्रवण – विद्यार्थी के पसंद के गीत या वाद्य वादन सुनाना, सुनतें सुनते उस पर हाथ से ताल देने का अभ्यास |
7. राष्ट्रगीत जन-गण-मन एवं राष्ट्रगान वंदे मातरम् सरल गायन |
8. कहानी, रंग एवं खेलों के माध्यम से संगीत-नृत्य का परिचय |
9. अरमंडी आधी, मंडी पूर्ण करके दिखाना |
10. दृक श्राव्य के माध्यम से संगीत से परिचय |
    (वाद्यों के चित्र दिखाना, वाद्यों का आवाज सुनाना, चित्रों के माध्यम से संगीत परिचय)
11. प्राकृतिक घटकों का मुद्राओं के माध्यम से परिचय एवं प्रदर्शन | उदा. पशु-पक्षी, नदी, फूल आदि